

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st OCTOBER 2018

कोंकणी गीतांचो झेलो



केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची

पाँच रुपया

मुखेल संपादक
सुरेश ए. शेणै

उप संपादक
पी. मनोहर

कोशाधिकारि
के. विजयन

वाँगडी
प्रो. जी. मोहन राव

न्यायोपदेशक
अड.वी.एन. वसन्त कुमार

प्रचार-प्रसार
टी. आर. सदानन्द भट

Layout by :
K. Santhosh
Mob : 9895212521

18.8.18, इन्स्टिट्यूट मिनेझीस ब्रागांझा सभाघर, पणजी
.: यशप्रभा संस्था कालापूर हंगेले "कोंकणी गीतांचो
झेलो" संगीत कार्यावळींतु गींत म्हण्तायि पुरुषोत्तम
पै, पद्मजा काकोडकार अनि चारुता जोशी कुलकर्णी ।
(चित्र आभार - पुरुषोत्तम पै)

प्रति - ₹ 5/-
वार्षीक - ₹ 60/-

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची



SPANDAN
Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 7 | अंक : 10 | 1940 आश्विन

संपादकीय

शतकाक केवल तीनि पाव्ल लगेन

'स्पन्दन' केरळान्तुली एकी एकि कोंकणी मासिका। तुम्गेले स्नेहादर मेळनु अतँ णवावे वर्षांतु प्रवेशु केल्या। शेंबरीक अनि केवल तीनि पाव्ल मात्र। ह्यी संतोषाची खबर कोंकण्यांक, प्रत्येक जाव्नु केरळान्तुल्यांक, अभिमानाचि।।

देवाली दया पूर्ण जाव्नु अस्स म्हळेलेंचि तँ 'स्पन्दन' चाँग रूपारि सगटाले हृदयांतु स्थान धोरूक कारण। तुम्गेले - पुस्तक घेंवचांलें, बरोवप्यालें अनि विज्ञापन दिवचांलें - सहकरण अनि प्रोत्साहन स्तुत्यर्ह तँ म्हळेल्यांतु कांयि संशयु ना।

प्रारंभ कालु थकून अतँ भित्तरि वार्षिक शुल्क साठि रुपयाचि दवोर्नु स्पन्दन वट्टेन कोंकणी, लिपि सेय्त, प्रचारु कोरूक जल्लें म्हळेलेंयि ह्ये संदर्भारि उडगासु करेय्तायि।

केरळ कोंकणी अकादमीन मुक्कारि दवर्लेले सान एक पावल सार्थक जल्लें। कोंकणी भाषी लोग रब्बून अस्सिले भारतांतुले सग्ग कडेनयि निर्विघ्न जाव्नु ह्यी मासिका पावंता। सगटांक ह्ये संदर्भारि धन्यवादु सांगता।

।।जय कोंकणी।।

सगटांक नवरात्री, दिवाळि शुभाशंसा !!!

कोच्ची, 01-10-2018

सुरेश ए. शेणै
मुखेल संपादक

कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर आयोजित प्रतिमास कोंकणी कविसंगमं 17 वें (विळम्बी-आषाढ) 4.8.18 क अनि 18 वें (विळम्बी-श्रावण) 01.09.18 क सुशीला टी. भट, कोच्ची हंगेले घरकडे दवोर्नु जल्लें।



एरणाकुळम :- (केरळ) संस्थानतल 2018-19 जूनियर त्रोबोळ चाम्पियनषिप्पान्तु चेल्लियांगेले विभागान्तु एरणाकुळम जिल्ला विजय पाव्ले। कु. एस.सूर्या प्रगल्भ खेळकार्नि जाव्नु वेंचून एय्ली। कोच्चीचे (स्व.) सुभाषचन्द्रन एन. एस. अनि श्रीकुमारी जी. हंगेली धूव।



वटुतला (एरणाकुळम) चे चित्तरेश नटेशन (दिल्लीन्तु परसणल ट्रेयनर जाव्नु अस्स) हंका 'Mr. Body Building (Small) and overall Men's Body Building' Championship न्तु "Mr. World" Title फाव जल्लें। स्लोवेनियान्तु IBFF (International Body Building and Fitness Federation) आयोजित मत्सरांतु 20 देशाचे प्रतियोगीनि भागु घेतलो। ह्रीं वैश्य समाज-वटुतलाचे वांगडि/अंग तँ।

09.09.18 श्रीवेंकटेश्वर कल्याण मण्टप, नोर्त परवूर :- यू. शिरोमणि भट हंगेले सप्तति अनुबन्ध जाव्नु 'सांस्कारिक संमेळन' घडोव्नु हळ्ळें। हंगेले दोनि पुस्तकाचे "മാനുഷ ജീവിതസാരം" (मलयाळम) अनि "കഥാദശകം" (कथादशकं - 10 कोंकणी काणियांचें संग्रह - मलयाळम लिपि) प्रकाशन जल्लें।

06.09.18 मडगांव, (गोंय) - कोंकणी भाशा मंडलान मडगांवचे रवीन्द्र भवनाचे जोडपालवान आयोजित केल्लें "पेटूल"। अंदु हे कार्यावळीचें चवथें वर्ष। पुस्तकँ, "शाणो मस्ती 5" सी.डी, "16 जानेरा" सी.डी., इत्यादीचे विमोचन जल्लें।

केरळचे बरोवप्याँ लगी

केरळ कोंकणी अकादमी प्रतिवर्ष "पंडरीनाथ भुवनेन्द्र पुरस्कार" दीव्नु एत्तायि। 2018 चे पुरस्काराक लघु गद्य कृती पेटोव्नु दिंव्हाक अपेक्षा करताय।

- केरळचे बरोवप्याँक तँ ये गद्य सर्त।
- काणी, नाटक, प्रबन्ध, यात्रा विवरण - इत्यादि 20 पन्ना पसी (20 Full scap papers) चड जंव्हा नज्ज।
- पन्नाचे एक भागान मात्र बोरोंव्का।
- बरोवप्यालें नाँव, पत्तो आदी वेगळेचि पन्नार बोरोंव्नु कृती लगि दवोर्का।
- कृती मेळका जल्लेली अंतिम तारीक 2018 नवंबर 15.
- कृती देवनागरीन जांव्का बोरोंव्हाक।
- पेटोव्नु दींव्का जल्लोलो पत्तो :- श्री. जी. मोहन रावु, सन्केतं, IX/1110 B, अजन्ता लेन, कोच्ची - 2. Phone : 0484-2229770

संत केशवदासालि
हितोपदेश कथा - 39

प्रो. वी. शिवानन्द भट,
पंचाब्जपुरम

रामालि मुद्दि

रामायणान्तु हनुमन्तान रामालि मुद्दि सीताक दिंवचाक तिका रामालो सर्व आनन्दु प्राप्त जल्लो। ते मुद्दिये मगल्यान रामालो हातु अनी रामाक तिज्जेरि अस्सिलो स्नेहु तीणे दिकलो। ते मुद्दियेचे प्रभावान तीणे प्रियतम प्रभूचें सर्व रूप दिकलें। हनुमन्तान मुद्दि हाडचे फूडे तिका कोणारि विश्वास ना अस्सिलो अनी विभिन्न रूप धोरनु येंवचे राक्षस म्हुण लेकूनु सगटारि संशयु अस्सिलो। परन्तु हनुमन्तान मुद्दि दिंवचाक तिका विश्वास जल्लो। तीणे ते मुद्दियेक चुम्बन दीव्नु आलिंगन केल्लें नेत्रांक ताजो स्पर्शु दिल्लो; मुद्दिये दर्शनान रामदर्शन प्राप्त केल्यावरी जल्लें। अनन्तर तीणे हनुमन्तालगि प्रश्नु कोरूक शुरु केल्लें, "हे दिसां मेगेलो प्रियतम कित्ति करतालो ? तन्नी कशि अस्सय? ते लोकान्तु सुन्दरतम। तांकां प्रेम कोरचिं अनेक दिव्य अप्सरां असतनी। हांव तांका प्रेम कोरचेवरीचि ते मक्का प्रेम करताय म्हणु तूं लेकतवे ?"

हे प्रकारारि सीता अनेक सुन्दर प्रश्न करतलि जल्ली, सर्व तिगेले आत्माचे प्रश्न। ही आत्माचि कथा। देवाक मिजेरि प्रीति अस्सकी ? देवु वास्तवाक मक्का प्रेम करतकी ? तांकां मिजेलगि कित्ति सांगूक अस्स ? दया कोरनु सांग। प्रियतम परमात्मा तुक्कायि मुद्दि पेटेयता। तूं, आत्मा, शरीराचे बन्धनान्त अस्सिल्लि आत्मा, परमात्मालि बायल। मुद्दि प्रकृतीचें सम्मोहक सौन्दर्य अनी विशेष जाव्नु पुष्प-सौन्दर्य। एक फुल्लाक चोव्नु ते फुल्लाचे सृष्टिकर्ताचें ध्यान केल्यारि होडि शान्ति मेळतली।

गुल्लीयो कित्ति
सांगताय - 53

एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

<u>छिद्र</u> - अनन्तर्दर्शेतुले अन्तर्दर्शेक तां छिद्र म्हणु संगतांय. दर्शेतुले अन्तर्दर्शेक लेकुचे मर्दीन अन्तर्दर्शेतु येवंचे छिद्रांकय लेकूकासता.

<u>आयुर्भाव</u> - मनुष्यांचे आयुष्कालाक सामन्यत: अल्पायु, मध्या आनी पूर्णायु म्हणु पूर्वाचार्यांनी निर्णयु दिल्लोलसा. जन्म धोर्नु 32 वर्षां पर्यन्त अल्पायु कालूय, तजुपरान्ते 70 वर्ष पर्यान मध्यायूय अनन्तर दीर्घायूय म्हणु सांगलां.

हें तुमका कळता व्हे?

कोंकण्यांगेले आचार-विचार

- सुशीला त्रिविक्रम भट, कोच्ची

"कान विन्दप - कर्णवेधं...."

जल्यार आज ह्या कालाक अधिकय जनां डाक्टर जनांलगी चेरडाक व्होरनु तां दुक्कोवनात्तिल्लें कान विन्दय़ताय. शुभ वेळु अनीक चोयताय म्हुण लेक्कुयां. फोवु कल्लेयलोलो, केळें विरकुच्चे थय्यारी मिठायि, चोकलेट इत्यादी विरकिताय म्हुण मात्र.

✤ कान विन्दून जल्यारी चेरडाली "अवदीसा" अथवा अनेक तराचें वायटपण दूर जत्ता म्हुण तां फूडे जनांगेलो विश्वासु. चेल्या चेरडूवांक उपनयना फूडे कर्णवेधं केल्लेले अस्सुका म्हुण संगप अस्सिल्लें. वेद-पाठ कर्णपुटांतु धोरनु रब्बोंवचे खत्तीर कर्ण सूत्र आवश्य तां खंय. मनुष्य शरीराचें अतिप्राधान्य अस्सिल्लें एक स्थान खंय कन्नापाळीचे वेज्जु घालचो हो भागु।

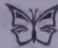
✤ खरशी (आस्तमा), श्वासकोश संबन्धी रोगांक सग्ग कर्णवेधं एक परिधि पर्यान आश्वासु दित्ता खंय.

✤ एक एड कालाक चेल्या चेरडुवांक कान विन्दप ना अस्सिल्लें. जल्यार फाषना नव्वान एक कानु विन्दून अत्तांची चेल्या चेरडूवं संस्कारु राकताय म्हुण लेक्कुयां.

✤ अमगेले अधिकय शुभ कार्यांक फोवु कल्लेयलोलो अनिवार्य जावनु लेकुयात.

✤ असले सग्ग संस्कारांक देश भेदु वरता.

केरळ - कर्नाटक - गोंय



- गोश्रीपुरम हरिकुमार

मस्सळी	जळकें	नुस्तें	आवेशु	दर्शन	भारु
गुर्बजि	गुर्बजि	गिर्बुजे	कॅवॅड	बागिल	दार
साळ	साळेरि/साळेरि ढुक्कर	साळिंदर	उद्दारि करप	वाग्ते करप	उगडावप

मंगळ

- सोमलता आचार, कोच्ची

मंगळ म्हणायि सरस्वती देवीचे
मंगळ म्हणायि
सर्वविद्या दिव्चि ती
सर्वजनालि माता ती
अखिलाण्ड नायकि ती ती सुन्दरि
अखिलाण्ड नायकि ती (मंगळ)

पुत्र पित्र आरोग्य संपत्त मांगल्य
दिवचि ती लोकनायकी
ती सुन्दरि दिव्चि ती लोक नायकी (मंगळ)

दारिद्र्य संकट नाशन
कोर्ची ती देवी
नवरात्रीन्तु एव्नु पंवची ती सुन्दरी
नवरात्रीन्तु एव्नु पंवची (मंगळ)

धूप, दीप, आरति
स्वीकारु कोर्चि ती
सर्वय कालार उळदिल्यार पंवचि ती सुन्दरि
सर्वय कालार उळदिल्यार पंवचि (मंगळ) ❋

"भांगरभूंय" कोंकणी दिनपत्र
वच्चायि ओणलैन :
epaper.thegoan.net

निषिद्धकर्म

- एन. माधव रावु, कोच्ची

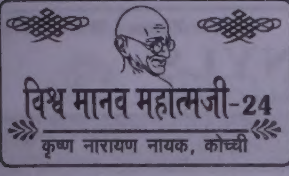
1. विनायकाकयि शिवाकयि तुळसीदळ पाणा।
2. शिवाक केतकि पाणा।
3. विष्णूक अक्षतान अर्चन पाणा।
4. देवीक दिर्बांकुरान अर्चन पाणा।
5. दुत्तीरो, रुवे फूल हज्जान खंचेयि देवांक अर्चन पाणा। जल्यारि विन्नांचवतीक मात्र गणेशाक रुवेफूल जत्ता।
6. लक्ष्मीदेवीक तुम्ब्या फूल पाणा।
7. सरस्वती पुज्जेक पारिजातक पाणा।
8. स्त्रीयानि सगळे कुवाळें कातरूक पाणा।
9. स्त्रीयानि साष्टांग नमस्कारु घालू पाणा।
10. स्त्रीयानि केसु सोणु देवस्थानांतु वच्चाक पाणा।
11. स्त्रीयानि गणारि नार्लु मारूक पाणा।

कार्तिक व्रत

- एन. सदानन्द कम्मत, कोच्ची

कार्तिक व्रतान्तु तुळसीपूजन
पश्चिम जागरण वीथि भजन
लम्बोव्याँ पंजीरें फिदरान्तु
घालूयां रंगोलि दर्लान्तु।

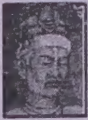




"अनियेक बिर्पाक पर्तून भारतान्तु"

चोवु भित्तरि वर्ष चारि भोग्गलिं। थंगाचे भारतीयां उद्धार उन्नति खातिरि सर्कार अनुमति अंगीकारा खात्तिरि उत्तम उचित प्रवर्तन कोरूक जल्लेल्यान्तु गान्धीजी कृतार्थ अस्सिलो। अनिक सगळेचि भारताचेचि बगेक प्रवर्तन कोर्का म्हुण तांका दिस्सलें। थंगाचे शेष भावि प्रवर्तनाक परिशीलन प्राप्त, समराहि चिन्तक चांग मित्रांक सन्नध केलेल्यान्तु गान्धीजीक आत्मविश्वास अस्सिलो। जल्यारि मित्रांक किन्चित मन ना गान्धीजीन पर्तूचान्तु! कडेरि तन्नि एक उत्तर घेत्तलें - आवश्य पळ्ळेंचि तरि जल्यारि एक वर्ष भित्तरि गान्धीजी पर्तून एत्ता म्हुण ! एकेक केन्द्रान्तु संकेतान्तु तन्नि यात्राभिवादन सभा अपैल्यो। कस्तूर्बाकयि गान्धीजीकयि उपहारांचि वृष्टि केल्लि ! चिल्वाण उपहार वे ? तितलेंय मूल्यवन्त भंगार वज्र सामग्रियो ! गान्धीजीले मन्न खिन्न जालें। तन्नि शुद्ध प्रेमान निस्वार्थ भावनेन सेवन केल्लेले सिवाय कस्सले प्रतिफल इच्छेन जावो न्हय ! तवळि राशिभरि अमूल्य ती सामग्री स्वीकार्चे कस्सि ? तितूलो दाम वेच करूका तरि जल्यारि पीडित शोषित दुर्बळ्यां खातिरि चांगपण करूक नज वे ? एकवेळे पोटाक खंवचाक सरि सासूसास भारतीयानीचि उस्सरमेटि काडता सणा यें भूषण वें ? तांका सांगून दिल्लेल्याचे सिकैल्याचे समचि उपराटे मू हें ! गान्धीजीक घट्टि मनस्ताप जालो ! अपण कस्सलो नेता- अध्यापक ! तांका लज्जेन मत्तें बवगलें। अमूल्य द्रव्य हाथान्तु अय्यिले वेळेरि सभार कोणे अस्सि अठौना! पुण गान्धीजी त्या वर्गान्तूलो न्हय-तंगेलि रीति-नीति वगळी। त्या रातीचें गान्धीजीक इम्मेक नीद ना। चिंवटि शान्ति ना। एक फल्यारि तन्नि कस्तूर्बा लग्गि खुल्ला सांगीले - "ये सर्व उपहारयि पर्तून दींवका" ! खन्चेयि स्त्रीचे वरि कस्तूर्बाकयि तान्तु पूर्ण सहमत दिस्सलेना। कौतूक कोमळ एक नेक्लेस पुणीयि, अपण्या खात्तिरि न्हंय जल्यारि एक सुन्ने खात्तिरि पुणीयि राकूका म्हुण कस्तूर्बा मनान्तु दिस्सले, पाप! गान्धीजी खंयि सोडता ? सांगून समझावनु कडेरि गान्धीजीन मत्तें हल्लेवैलें। सेवना प्रतिफल केदाण प्राप्त करूक नज्ज, प्रतीक्षा करूक सरि नज्ज ! तांगेले अटल प्रमाणान्तु ते घट्टि राबीले। तितलेयि अपरूब अमूल्य उपहार थांगाचे भारतीयांले बरेपणा खातिरि विनियोग जांवचे लेकान सन्चित निधीन्तु तन्नि हर्षान समर्पण केल्लें। *

संत कबीरदास दोहा -



एन. लक्ष्मण मल्या, कोच्ची

"मरि जाऊँ माँगूं नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारणे मोहि न आवै लाज।।"

हाँव मेग्गेले शरीरा खत्तीरि मग्गनां। मग्गुचे पस्सी मोरूक तैयार जत्ताँ। जल्यारी दुसर्यागले खत्तिर मग्गुचाक मक्का लज्जा ना। कबीर संगता - व्यक्तिले, लाभातुँ अनुचित इत्तिकी तेंची सग्ग लोका चांगपण (हितकारि) कोर्चे जल्यारि पवित्र जत्ता।

देवालि सृष्टि



- वसन्तकुमारी पी. एस., कोच्ची

चैनान्तु होड्ष्‌यू म्होणु नावाचो एकु गुरु अस्सिल्लो। ते गुरूलग्गी दोग जाण युवक सिक्ताले। तंगेली सिक्वण सग्गि समाप्त जंवचानीक गुरून तंक्का गाँवान्तु पोरतूनु वच्चाक अनुमति दिल्ली। जल्यारि युवकांक एकु आग्रहु। गुरूक यथाशक्ति दक्षिणा दींका म्होणु। तें अयकूनु गुरून संगीले "तुम्मी मक्का दामु, दुड्डु, रत्नॅ कांई दींवका नक्का। तुम्मी वच्चाई। ये भूमीरि अनेक रूक-रुक्कावळी अस्स नवें ? कांई प्रयोजन नत्तिल्ले एक सस्य दिक्कूनु धोर्नु हाणु दिल्यारि जायत।"

दोग्गय युवक उपयोगूयि, प्रयोजनूयि नत्तिल्ले सस्य सोद्दूनु गाँव, रान, पर्वत इत्याक ? हिमालयाचेरि सरि वर्ष कॅणक्किने भोवले। कसलोई पुणेयि उपयोगु नत्तिल्लो एक रूकु जावो, एकि रोम्पि जांवो तंका मेळ्ळेना। ते रित्ते हत्तान पोरतूनु एयले। जल्यारि अनेक सस्यां पसूनु अस्सिल्ले ज्ञान तंका मेळ्ळें। गुरूलो उद्देशूयि तोचि तं अस्सिल्लो। मनान् अनुग्रहु दीव्नु तंका गुरून गाँवान्तु पोरतूनु बळेय्ले। भावीन्तु चाँग दोनि वोयद जाव्नु अनेक जनालो जीवु रक्षण कोरूक नाँव पवलेले जल्ले ते युवक।

भूमीरि प्रयोजनु नत्तिल्ले कॉंई सरि देवान रच्चिलेना म्होणु अम्मि मनां कोर्का।

देवी लक्ष्मीदेवी



- लता रंग मल्लन, माळा

देवी लक्ष्मीदेवी
राक अंका देवी
मायें महामाये
पांव अंका तायें (2)

तुक्का सोड्नु भोवुनु भोवुनु
अंचे पाय वोळ्ळे
सर्वय दिक्कारि चोवुनु चोवुनु
अंचे दोळे वोळ्ळे वोळ्ळे
तुज्जे पय्यांकडे अम्मि
भक्तिमान एत्तायि
तुग्गेले दर्शन मेळूक
अम्मि होड़ि आशा पंत्तायि (देवी)
मंगल्य म्हळ्ळेलें स्त्रियांक
व्होड कारण, ऐश्वर्य म्हळ्ळेलें
कुटुम्बाक भूषण
तुग्गेलि दया अस्स जल्यारि
तें सर्वयि जत्ता।
तुग्गेलि दया नत्तिल्ले
कश्शि जंचाक वत्ता (देवी)

अम्मी पाप केल्यारि
तुक्का कोपु एत्ता
अम्मा क्षम पांव म्हळ्यारि
तुज्जो कोपु वत्ता
तुग्गेले कारुण्यान पाप-
मोचन अम्का मेळता
तुग्गेले कटाक्षान मन्नांतु
समाधान जत्ता। (देवी)



सूणेले काणि

- यु. के. पै, पुत्तूर

चूँय म्होणु पोळो काडचे
शब्दु आयकून सूणे
वासरींतु रिग्गुन बोंकून सांग्ले
तूप घालि माय्ये ऊणे

पंच (पांच) प्रयाग

विष्णु प्रयाग, नन्द प्रयाग,
कर्ण प्रयाग, रुद्र प्रयाग,
देव प्रयाग

अय्किल्लि रस्पति



बायलो एक फंता संगतायि खंयि, दद्दूले चडय मूर्ख तँ म्होणु।
अनियेक फंता संगतायि खंयि, अम्मी दद्दूलाँ पस्सि खंचे कायर्यांतु मगलान अस्सय म्होणु।

चकवा (विनोदी एकोक्ती)

- विठ्ठलराय भट, कारवार

"कठिण प्रश्न विचारणे सोपे,
सोपे उत्तर देणे कठीण."

औषद पंक्ति - 80

अज्जेली वोक्कदां

(मुत्तश्शि वैद्यं)

सुशीला टी. भट्, कोच्ची

<u>एट्टी अच्छट (अचूक) एक्कौषधां</u> :

एकसीर (ചെന്നിക്കുത്ത് / Migraine) :- (कपलाचे एक भागान मात्र जावनु निश्चित समयार केदनाय एवंची अस्वस्थता) ओडिच्चुकुत्ति (ഒടിച്ചുകുത്തി / *Wild Sage (Lantana camara)* म्हळ्ळेले झाडाचें मूळ धूवनु रोस्सु काडून. सूर्योदया समयार रोग्याक पूर्वदिशेक अभिमुख जावनु बेस्सोवनु पय्यांचे उंगटया नंकटान्त रोस्सु थेंबायतलीं. मागीर शरीराचे संध-संधाक तो रोस्सु लावनु कपला भागान लायनु, तळवेरीय पीळतलीं. सकल थाकून उंच एवंचो तां हो प्रयोगु. तीन दीस हो प्रयोग केल्यारी एकसीर (ചെന്നിക്കുത്ത്) शमन जात्ता.

गुल्लेरी समूल काडून धड्डावन रोस्सु काडूनूय उंच सांगिल्लेच लेकान अरुणोदयाक करप आसिल्लें. उंच सांगिल्लेच रीतीन. हेंवय एकसीर शमन कोरचें.

सुभाषित



प्रो. के.एन.आर.भट

कोच्ची

"न रूप मात्रेण वधूर्वरेण्या, न वा विरुपेत्यवमान योग्या।
या यत्र धर्म चरणानुकूल्या, संरक्षणीयो/भय वंशदीपा।।"

केवल अंगलोटु (बाह्य रूप-लाचण्य) पोळोव्नु एक कन्यकेक वधु जाव्नु काडूक नज्ज (व्हर्डीक कोरुक नज्ज)। विरूपी त म्हणु लेक्कूनु एकलेक अपमानु जावो त्यागु जावो करचेंयि नयिं। धर्मपरिपालनान्तु तसीचि यज्ञानुष्टानांतु अपण्याले बम्णाक जांका जल्लेले तस्सि सहकारु दिंचि तॅं, एक उत्तम पत्नि। तस्सलि कन्या बप्पूले घरल्याकयि बम्णाले घरल्याकयि उज्वल प्रकाशु दिंचे एक दिवले समान तॅं। तस्सले कन्येक अल्प-स्वल्प उणावणि अस्स जल्यारि सरि रक्षण कोर्का आनी अभय दींका जल्लेंले तं।

⌘

कुळितांचो सारु

बायलाँ खातिर (ददल्यांकय) - उषा आर. भट, हैदराबाद

सामग्री

1. कुळितु - ¼ कि
2. लसुण - 5 बोयि (हित जल्यारि मात्र)
3. सुक्कि मिरसांग - 3
4. मिर्याकॅणु - 5
5. फण्णाक - तेल, सस्सम, करबेवापत्ति, जीरें

कुळितान्तुलो पथोरु, कोयरु आदि वेंचूनु पॅर घालनु, एकि रात्रि पूराय उदकान्तु फुग्गोंव्का। धूव्नु, उद्दाक पॅर घालनु पुनः बुड्डॅसि उदकान्तु सिज्जोंका। सिज्जेयलेल्याचो पाद भागु (¼ वण्टो) काणु मिर्याकणूयि धड्डाव्नु, एक्कडे कोरनु, वन्नान्तु (Mixie) घाल्नु तंबळी सरि वट्टूनु काणु दव्वोर्का। (यें साराक दट्टायि मेळचे खत्तिर तं) बाकीचें सिज्जेयलेल्याक फण्ण घालका। वट्टूनु दव्वर्लेलेंयि तन्तु रक्कोव्नु खतखॅतो काडका। लसुणे बय्यो चेंचूनु खतखतो कळ्ळेल्यान्तु घालनु चांग प्रमाणी मिश्रण कोर्का। (लस्सूण घालनु सिज्जोंचाक पाणा। लस्सुणेन्तुले औषध मूल्य ऊब जाव्नु नष्ट जत्तलें)।

वीषा सोरोपु

- कु. अञ्जली किणी, कोच्ची

बंधु बांधव मित्रां रूपान असिल्यान्तु व्होड शत्रु
हास्सूनु दक्कोव्नु घासु मारचो स्वभावु हो विचित्रु
कन्नान्तुल्यान वीष चोडोवनु मनान्तु चिक्कोलु भोरचे
वीषा सोरोपाक घासु मारूक नेणतना वगळे इत्तें कोळचें ?
आमगेले चिन्ते भाराचि घट्टि चोडोव्नु जत्ताय तन्नि तृप्त
आमचे दोळ्यांतुल्यान थेंबेंचे उद्दाक तंगेले ताळ्याक अमृत
सायना आमगेले संतोषु दिकिल्यार शेण्डता रातीचि नीद
चांग उत्तर दोनि पेळता म्हळ्यार पड्या कन्नान्तुले वेद
मनान्तुलो चिक्कोलु निव्वोळनु काणु उडकायाय खळियान्तु
ना जल्यार फोणोय विस्कळाव्नु अम्मीयि चरतलि वगळाले अंङ्गणान्तु।

कृष्णालो मित्र

- आर. एस. भास्कर, कोच्ची

कृष्णालो इष्ट
आसा सुधामु
कृष्णाक भेटेक आयलो
फोवु घेवनु आयलो.

एकी मूश्टी फोवु
काडून खालो कृष्णान
सुधामालि खोंपी आतां
जाले मूं रावळार.

निद्राहरण

- एम. एल. रवीन्द्रनाथ हेगडन, एट्टुमानूर

रत्ति निद्दांतु सोवदु जत्तायि
अम्मि भीव्नु जग्गि जत्तायि
दीवो घाल्नु अम्मि चोयतायि
कायिं खंयि दिक्कूक ना मू

दुश्शेरि अम्मि निद्देन्नु पडतायि
निद्दां दुश्शेरि सोव्दु जत्तायि
दीवो घाल्नु अम्मि चोयतायि
कायिं खंयि दिक्कूक ना मू

मन्नांतु चोरा भीति एत्तायि
भीतीन अम्मि राति कडतायि
मत्यारि पेरान पंगूर्नु पडतायि
भीतीन अम्मि राति कडतायि

एशिश अवंगेलि नीद वत्तायि
क्षीणान अम्मि दीस कडतायि
रत्ति घरकडे कोण चडतायि
अम्का कांयि मन्नांतु जाग्नायि

घरकडे दोनि मज्जरँ एत्तायि
अम्मि तंक्का लाळन करतायि
दूद तंक्का रोक्कोव्नु दित्तायि
स्नेहान तीं म्यावु-म्यावु म्हणतायि

तेद्दूस रत्तीयि सोवदु जत्तायि
चीं-चीं म्होणु अम्मि अयकतायि
दीवो घाल्नु अम्मि चोयतायि
मज्जर-विन्दूरु चब्बूनु खेळतायि

सप्त-बद्री

बद्रीनाथ
(बद्री-विशाल)
आदि-बद्री
वृध-बद्री
ध्यान-बद्री
अर्ध-बद्री
भविष्य-बद्री
योगध्यान-बद्री

जायदीसा शुभकामना

- के. अनन्त भट्ट, कोच्ची

जीवनांतु ते मेळो तुका, हज़ार जायदीस।
देवु बरें करो आयुष्य दीवो, शंभरि आनी वीस ।।प.।।

दुःखाचे वोत लागना तशि ती, सुखाची सावुळि मेळका।
सुख-दुःख दोन्नीयि मेळता जगांतु, मन तें खुशीन खेळका।।1।।

बरें करका बरेंचि मेळका, तुका बरेंपण जावका।
परमात्माले कृपेन तुगेलें, दुःख धावका सुख पावका।।2।।

आयुष्य आरोग्य सौभाग्य मेळो, जीवन सुखमय जावो।
जायदीस प्रतिवर्ष हर्ष हाडो, सर्व बरेंपण पावो।।3।।

शिकवण - सुनिल पालकार, नावशी-गोंय

तुमचे मदीं मिसळून रावंक सोदतालों
वायटा ब-याक वेळार पावंक सोदतालों

दुखणें आसप हो वांटो जिणेचो
घाव्यांचेर उपाय तुमच्यां जावंक सोदतालों

घालून पदरांत जगाच्या धन मायेचें
पोसोभर पुण्यायेन न्हावंक सोदतालों

अविनाशी वशांतल्यां सगल्यां अशांत अत्म्यांक
वळख म्हजी सारकी दाखोवंक सोदतालों

येयत वचत रावलों धरतरेर नव्यां रूपांनी
दर खेपेक नवें शिकोवंक सोदतालों

आदगति गुंतिले काव्यमाला

- नागेष अण्वेकर, कारवार

हेतु चांग मनांत भोरुनमि
हातु जोडून लग्गी यवुकमि
घात कारि विचार धांवुडूनि
मातृभाषेक मान दकोंका मोग धाकुन



श्री सरस्वति

- टी. उमेश भट्, कोच्ची

श्री सरस्वति पुस्तकधारिणि
विद्यादायिनि वेदघोषिणि
मयुरवाहिनि शुभ्रवस्त्र धारिणि
वीणावादिनि ब्रह्मचारिणि
शारदे ब्रह्मलोक निवासिनि
शोकविनाशिनि आनन्ददायिनि
आरादिके देवि भक्तप्रसादिनि
जगतोद्धारिणि शान्तिदायिनि
दुर्बुद्धि नाशिनि सत्बुद्धि दायिनि
सर्वेश्वरि भक्तहृदयवासिनि
संगीत स्वर राग ज्ञान प्रदायिनि
सर्वात्मिके देवि वरप्रदायिनि ।

पञ्च केदार

केदारनाथ, तुंगनाथ, रुद्रनाथ,
मध्यमहेश्वर, कल्पेश्वर

कोंकणी प्रसारण - आकाशवाणी कारवार : (सग्ग बिरेस्ताराचे देनपांरा 12.30 - 1.00)
धारवाड (765 Khz) MW: (सग्ग सोमाराचें रत्ति 10.00 -10.30 जाई-जूई कार्यक्रमु)
तृश्शूर (630 Khz) MW, कोपिकोड (684 Khz) MW : (मंगळाराचे संजे 5.00 धोर्नु 5.15 पर्यन्त)

रसपति - आर. के. प्रकाश, पळ्ळूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

श्यामळक्का - डॉक्टर, लगि लगि जाव्नु हाँव मंत्री जांव्चे सपन दिकता। सबाव जत्तले वें ?

डॉक्टर - प्रश्नु ना, वखद दित्ता। अनिक दुःस्वप्न दिक्कून्ना।

* * * *

केप्पो बाबु : डॉक्टरमाम कालि राती फुग्गो फुट्टूचो शब्दु आयकूनु हाँव भिल्लो !

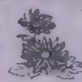
डॉक्टर : प्रश्नु ना, वखद दित्ता। खोदनो फुट्टुचो शब्दु तँ तूं कालि आयकलोलो।

आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

'तें एक मात्र'
कोणे
'मक्का जायि, मक्का जायि' म्होण्णा।
तें इत्तें ?

मरण

परणी म्हण्णी (मंगळूर दिक्काचि)



- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

* जेवणा रूचि अव्सून वळ्यारि,
विद्ये रूचि गुरून शिकेय्ल्यारि।

* दोग्ग सिवायि लॅडायि ना।

* पुज्जा कोर्नु बेजारॅ अय्लो भट्टु
बायँतु उड्लो;
थंयि तक्का साळिग्रामु मेळ्ळो।

* जीवु सग्गॅटांकयि व्होडु।

* जिब्बेक दाक्षिण्य ना जल्यारि
पोट्टाक दुर्बळपण ना।

कोंकणी - മലയാളം - English

- शैलेष कम्मत. एम., कोच्ची

कूस - പൂട - Hair like substance

कंटो - മുള്ള് - Thorn

किस्सीर - നാര് - Fibre

सिग्गीर - ആര് - Tiny thorn like Splinter

कप्पटि - പൊടിവിറക് - Splinter

सिर्पूट - ചുള്ളി - Twig

कड्डि - കൊള്ളി - Small Stick

26.8.18, श्री मल्लिकार्जुन महाविद्यालयाचे सभाघर, काणकोण (गोंय) :- अर्थ प्रकाशन, काणकोण हन्नि श्री मल्लिकार्जुन महाविद्यालयाचे कोंकणी विभागाचे जोडपालवान वर्धापन दीस सुवाळो मनाय्लो। हंतु कै. रमाकांत वेर्णेकार यादस्तीक "अखिल भारतीय कोंकणी कविता सर्त 2018" चे विजेता अनिकेत गांवकार (प्रथम), शर्मिला प्रभु (दुसरे), पूजा नाईक गांवकार (तिसरें) अनि प्रोत्साहन - अविता गांवकार, शंतनु अनिल अय्या अनि एन. बालकृष्ण मल्या हंका पुरस्कार वंटप, "कोंकणी भाशा सेवा पुरस्कार" - शिरीष पै अनि कै. मंजुनाथ दास कामत यादस्तीक "कोंकणी भक्ति साहित्य सेवा पुरस्कार" - फा. माउजीन आताइद हंका सन्मान करप जल्लें। उदयकांत अणवेंकार लिखित "लाखांत एक न्हवरो" (कारवारी कोंकणी बोलीतलें कोंकणी नाटक) पुस्तकाचे प्रकाशनय जल्लें। कवितेचेरि कार्यशाळायि ("कविता-प्रकार आनी आकार", "वेंचीक युवा कवींचें संमेलन", "कवितेंतली सृजनशिलता", "वेंचीक आमंत्रित म्हाल्गड्या कवींचें संमेलन") जल्ली।

24.8.18, टी.वी. रमण पै सभाघर, मंगळूरु :- कोंकणी भास आनी संस्कृती प्रतिष्ठान आनी विश्व कोंकणी विद्यार्थी वेतन निधी, विश्व कोंकणी केन्द्र, मंगळूर हन्नि "विश्व कोंकणी विद्यार्थी वेतन" (Scholarship) वितरण सुवाळो घडेय्लो।

18.8.18, इन्स्टिट्यूट मिनेझीस ब्रागांझा सभाघर, पणजी :- हन्नि अनि कला आनी संस्कृती संचालनालय, गोंय सरकार, हाच्या जोडपालवान यशप्रभा संस्था कालापूर हन्नि "कोंकणी गीतांचो झेलो" संगीत कार्यावळ घडोव्नु हळ्ळीं। (मुखचित्र जाव्नु दिल्यां।)

पुस्तक प्रकाशन

25.8.18, ब्लाक बोक्स, रवीन्द्र भवन, मडगांव - "चंपू इन रांदचीकूड" (बालकाण्यो संग्रह) - हर्षा सद्गुरु शेट्ये।

30.8.18, कला आनी संस्कृती भवनाचे भोव उद्देशी सभाघर, पणजी :- "अग्रदूत" (कादंबरी) - महाबळेश्वर सैल।

दया करि सरस्वती

- श्रीकर वी. भट, कोच्ची

दया करि सरस्वती भगवती
दया करि सरस्वती भगवती
विद्या दायिनी ज्ञान प्रदायिनी
हे जगद्‌जननी पुस्तक धारिणि
बुद्धि प्रदायिनि सैभाग्यदायिनी
सदा दवरी कृपा तुगेली अवंचेरी
भव समुद्रान्तु बुडल्यांक अंवका
तूंचीमु देवी तारण कोरका
भक्ति मुक्ति दीव्नु अनुग्रहु कोरका
अंवगेलें जीवन् शोभन कोरका
साष्टांग तुक्का अम्मी नमस्कारु करताय
शरण दी माता तुगेले चरणारी । ✣

राग संगमं

- वी. लक्ष्मण पै, कोच्ची

संगीत रे तें अमूल्य औषधॅ
नरजन्म अम्का तें वरदानॅ
सप्तस्वर तज्जे मूलाधारॅ
श्रुति-लय-ताळान राग संगमॅ (संगीत)
संगीतमय तें सर्व चराचरॅ
ना तरि जल्यारि सर्वय तें शून्यॅ
दूर करतलें अम्चें मनांचे क्लेशॅ
भोगि रे मनुष्या - संगीत नवरसॅ (संगीत)
संगीतार्चनेन केल्लें समर्पणॅ
देवादि देवांक आत्मसमर्पण
सर्व चराचरांचें मोक्ष प्रदायक
भोगि रे मनुष्या - संगीत सुमधुरॅ (संगीत)

दया दवरि देवा !

- गोश्रीपुरं हरिकुमार

एक तुगेल् रूप जाँव्का मेझ्झे मन्नान्तु
केवल तुझेरि भक्ति जाँव्का सदँ
हृदयान्तु
एक तुगेल् नाँव जाँव्का सदा जिह्वेरि
देवादिदेवा ! दया दवरि मेझ्झेरि ।।

चेर्डुवांलि चित्रँ





कु. मंजिमा एम. पै (9) । पळ्ळूर मनोज बी. अनि ऊर्मिळा हांगेलि सुपुत्रि ।

एक प्रयोजनप्रद कोंकणी वेबसैट :
konkaniwordnet.unigoa.ac.in

08.09.18 विश्व कोंकणी केन्द्र, मंगळूर :- कोंकणी अध्यापकांलि एकदिवसीय कार्यशाला घडेय्ली ।

Reg. No. KERKON/2012/45527
Vol. No. 7 Issue No. 10
Rs. 5/- No of Pages: 20 **SPANDAN**
Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI

Registered KL/EKM/732/2018-20
Licence No. KL/CR/EKM/WPP-22/2018-20
Licensed to Post Without Prepayment
Date of Posting 10. 10. 2018

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph: 2350960 and Published at 8/28, Santheri, 1st Floor, Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682 002. Editor - Suresh A. Shenoi